



१ गङ्गादह ॥ १ ममि ॥ १ हिंयेम ॥
 १ धानावग ॥ १ गवदुन्ने ॥ १ मसमनका
 १ जल ॥ १ नर्ग ॥ १ सञ्जवा
 १ मिसिखानि ॥ १ नडावोद ॥ १ हानानिद
 १ जेठ ॥ १ ममि ॥ १ सागियल ॥
 १ दमिसमान ॥ १ थिमदुड ॥
 १ कोडमल ॥ १ येनोम ॥ १ अशिय
 १ नुवानकि ॥ १ नयति ॥ १ नोवय
 १ कालव ॥ १ मतिनाथि ॥ १ वसुन
 १ यथा ॥ १ मरुवोद ॥ १ वायव
 १ गवता ॥ १ किमन ॥ १ पुनायन
 १ वबना ॥ १ नमुनुनी ॥ १ केगव
 १ कोरति ॥ १ कोदिनि ॥ १ पुनरेनव
 १ यथानि ॥ १ सुगोयन ॥ १ नोस
 १ कोनिसे ॥ १ कोवाका ॥ १ मई
 १ सवमालि ॥ १ लख ॥ १ वयिनोश
 १ यलया ॥ १ दुलोयो ॥ १ सुहना
 १ नासापिना ॥ १ यग ॥ १ किद
 १ नखदडा ॥ १ कवव ॥ १ न
 १ कयमादडा ॥ १ मशसनाकि
 १ कमालिद ॥ १ ममियन ॥ १ द
 १ ककया ॥ १ मक ॥ १

ममि
 ममि
 निवनि
 ममि

ममि
 ममि
 ममि
 ममि

ममि
 ममि
 ममि
 ममि

१ वडकाय विधि ॥
१ यथैमादाकान्या ॥

१ कलपय ॥

१ मेरुमले ॥

१ यमचयदिगि ॥

१ लोड्याग ॥

१ नैमाकवचि ॥

१ देवालादि ॥

१ मायना ॥ १ वडलादडा

१ यथागि ॥ १ यिमदडा

१ यमले ॥ १ लाडठवान

१ कोमवदि ॥ १ जयवाग

१ चावदि ॥ १ वनी ॥

१ माकसना ॥ १ जकेथली

१ वडडा ॥ १ मथेलुव

१ उडठपना ॥ १ कोलेव

१ मगथनि ॥ १ जडाभरन

१ यथयनि ॥ १ लासाविग

१ वाठुदि ॥

१ दलदडा ॥ १ तुनी ॥

१ योदडा ॥ १ गडाय ॥

१ वकदडा ॥ १ नवदि ॥

१ कोदिदडा ॥ १ याददडा ॥

१ वज्जोगिना ॥ १ डाका ॥

१ साधन ॥ १ गेदुमाका ॥

१ यन्तावागदडा ॥ १ रुमड

१ डागि ॥ १ डाका ॥

१ नमावदया ॥ १ दिनु ॥

१ अनुमवि ॥ १ यविलि

१ वधमाया ॥ १ याग ॥ १ स्त

१ मथा ॥

१ दामानिम ॥ १ कथवि

१ वीनादग ॥ १ जानागाल

१ गवाक ॥ १ लाकवत ॥

१ कोथकी ॥ १ यन ॥

१ रुथसिमाका ॥ १ वाक ॥

१ ननकोडा ॥ १ काकनाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्थवलिखवना ॥ ॥ वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वमनीयपिचुखा ॥ ॥ वलिखवना ॥ ॥ गानायक ॥ ॥ नवायमधुनायलिनीजाना ॥
मिमधुल ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥

[illegible]

धनाधियोगिष्ठः ॥ ६६ ॥ मानसगंधिधनिष्ठदवाउद्धिचन्द्रार्कयितामर
 देवदवासमस्तारविश्वनाभाधनार्थनागुच्छगले ॥ ६७ ॥ समस्त
 योगिश्चैकेनिवेद्यकस्यकरयकारयैवदिष्ठसंस्तुता ॥ ६८ ॥ द्रुष्ट
 समस्त ॥ ६९ ॥ समस्त ॥ ७० ॥ समस्त ॥ यथावलिधूपवलिधिलयनच
 गच्छन्नुज्जन्तुयिवन्तुयदूष्टद्वकर्मसरुलयगन्तुसाया ॥ लाक

यानवलि ॥ ७ ॥ उ नमो लयाया वरु वरु यानय वरु म हा को धा
 यम हा हा कट रोन वाय अमिम मन यन वरु यास गृहिन रुता य रुम
 ग क छु लिख शखादि र गि रु श व ध श रु न र य व र ग र्क र वि स ट य र स
 वि वि ध वि नाय का नां मा हा ग ग य गि र्की नी ध का नाय रू श रु ट र खा ला ॥
 दि रु व लि ॥ ७ ॥ उ ओ ४ स व य ध ग द हा दि ग ला क वा नु रु न न ग र

४१

हा समुद्र मय धा रु य स नु सै य न मा न न जा य म म ध ल या ला न ग ग स मा
 व र्णा व लि ना व र्मा या पु स म व हा न हा का हा धा रु य र्था व र्णा हां ४ ॥
 ४ ॥ उ ओ ४ स व य ध ग द स दि ग ला क वा नु रु न नै ग ग ग स म द य रु
 य म न हा ग ग हा स मा ला क या ला स व स व स त्वा ना म् ॥ न य र्था ॥ उ व
 जा य व मा या व रु व जा न ल व रु का न व रु ना रु स ना ग व रु व रु नि न

७

नलिमा

गगा न

विजसुखत्रवजसुत्रववजसाइवजकाइवजकुक्षुलिवजयुसोनवजय
मयिरुष्टुधिविदवतासयलिवानानन्दयुस्यवयदीयगधनेविद्यादि
सयुक्तैवल्लयदानैयतिष्ठायसुधेममदिनखेसैवधुवनैवाभोन्या
युजावनालागधससुखयदानकानसुधइष्टयइष्टानां कन्याव्यमनसा
मनैवाह्यजुमय२सुमय२माहये२विधैसय२वृतिदग्भननैजाव

अमसर्वसर्वसत्त्वानाचरुदिरध्यसुवधुवनधन्याजोवनावाव्यसस
स्वानिमदासुखयविद्विद्ययावदावाधिमैद्युयनैदाखयससमय
भक्तिंनश्रीकुनूँआ४सर्वइष्टमदायराउ३कठमनिनैशोकनूँदो
नयनदूँ२रुटखाहा॥मङ्ग३वजवगीठधनवल्लि॥ २ ॥
उँआ४दूँहा४वृलावसिगय४इगयालख४कन्यायव्य४वृद्वैवल्लि

गन्धयुष्यधपदीयवाक्यैर्वाक्यमन्त्रैश्चवागनयसवत्रिवाननीष
थीन्मवसिगुद्रुनुरवादनुयिवनुडा४ह्वंकासगुर्वांसमसर्वमस्वान
वहभक्तिनडांकुनरुपिंयनूवनुह्वंरुटवजधनकोइयायानिस्वा
हा॥कुर्यान्नवलि॥४॥॥इतिभाषावजमहाकात्रायवर्द्धसास
नेनाकाकाय॥इति॥कोह्वंरुटमयमीसयुष्यधपनकनानयानात्रु

धनागदवयत्रनाकमगुद्रुनुरवादनुयिवनुडा४ह्वंकासगुर्वांसमसर्वमस्वान
वहभक्तिनडांकुनरुपिंयनूवनुह्वंरुटवजधनकोइयायानिस्वा
हा॥कुर्यान्नवलि॥४॥॥इतिभाषावजमहाकात्रायवर्द्धसास
नेनाकाकाय॥इति॥कोह्वंरुटमयमीसयुष्यधपनकनानयानात्रु

ॐ स्वस्ति स्वाहि स्वास्तु सुस्तुः ऊः हं वह ॥ सफपानालद
दामिनि सर्व सत्त्वनाक ॥ भनि पूष्टी जडा वज्र क्ष गुफि
रूतूरूं २ रुद्र २ वज्र चक्र आक्षोपय निष्ठुखाहा द्वा
ओं सर्व धर्माव कृधिः काय वज्र माहाकाये ॥ मम नूरु
जगमनायः सर्वासिद्धि रूं २ जो २ वृंद वली गृ द्वा

स्वः स्वाहिः सर्व्व इष्टमत्वाद् मनकया हः हिः हुं
३ ह हा ह्र २ खा हा ४ ठाँ न मा ह ग व श्य आर्य्य प
गि स जा यः आर्य्य महा मा ह प्र प म र्द्ध निः आर्य्य महा
मा यु जिः आर्य्य मा ह भित्त व तिः आर्य्य महा म द्रा
नू म ध नीः वृक्ष वैव महा स्मानाः विद्या द वा महा

वजाः मासिके भृशनिर्घेवः ताजाद्वीगथसकृसिः व
ज्रभ्रवलयाधगाः महाधगागर्थेवचः महाकाली
चहुगचः वज्रहुगिगथसपजाः गूपासिचज्रपासिचः
वज्रपातिमाहावजाः वज्रमाजामाहाविद्यागर्थेव
मृगशुलीः अपजाजिगमहाद्वीकालकाक्षि

माहावलाः गथसधन्यामाहालगपमशुलील्य
वचः पूष्यदकिमनिन्दस्यर्धकभिधपिगजाः म
हनजागथसद्वीधन्याधेविचूत्मालीनीः जाकु
कः जगाचैवः वृद्धाऊगिकनापीकाऊँ आः हूँ हूँ
स्वाहा ९ ५ ५ ५

ॐ विद्यामकायमहाकोक्षयः महावज्रपद्माक्रमं
देवलिङ्गं २ ख २ खाहि २ ममसर्वविद्यान्तः ॐ
२ रुद्र २ अय २ दह २ पक् २ मय २ ॐ आ विद्याम
कायहं रुद्राहा १० ॐ वज्रयागिनी दीनृः
खं २ रुं २ अं ३ ममसर्वमिद्विषयकं ॐ देवलि

गृह २ रुं २ रुद्र २ खाहा ११ ॐ पिप्पविपूर्वव
लिमर्वापदुवनाभिनिमर्वाजागपममयः सवर्हय
विनाभिनिर्देवलिः गृह २ ख २ खाहि २ सर्वदु
ष्टमाजानाः माजय २ गृह २ वध २ हन २ पंच २
माजय २ रुं २ रुद्र २ खाहा १२

27/2

MSA ARCHIVES

ॐ सर्वजगज्जगत्सु भुगपतपिठम् वात्मादाय
देवलिगृह २ सिद्धिकृष्णम् नीलकृष्णम् नीलकृष्णम्
जुधजगद्ग्राह्यापनिष्ठम् १३ ॐ श्रीं नीलवज्रि
मृत्युकायः धाजयद्वयवहदुर्ध्वकम् विजृपा
ऊः ऊग्यायवृहयहः ॥ हिमलिगृह २ पक्क २

स्व२श्वाहि२भुंज२विघ्नहर्जवप्रपूयनःकलि
प्रतिगृह्ण२क्षी२रुंरुद्रस्वाहा १४ ओंआरुंवज्रया
गितिप्रतिऊरुंरुद्रकलिकिंरुंरु४रुःहैरुद्रमम
४भनिकूपूस्वाहा १५ ओंश्रीरुद्रकमहावज्रकंध
प्रयस्य२वध२नाषय२सर्वंगकगकीर्तिना

क्रदयहं २ ह्रद् औ वृद्धदाकिनिप्रतिच्छं दैवलि
हं २ ह्रद् स्वाहा १६ औ ख २ खाहि २ गृह २ गृह
नुसर्वाहिनिकायं दैवलिहं ह्रद् स्वाहा १
हं आः कौद्रिसकलगधविजोविजस्वलिनापिपिक
जैः अश्वनज २ अवनजं तु यथादि लोकपायं

दैवलिगृह २ हं स्वाहा १७ औ आवजवृकं दै
वलिगृह २ ख २ खाहि २ ममममीपूष्टिक् स्वा
हा १८ औ सर्वज ऊपिष्ठ वायः जाऊष्ठ किनजा
ष्ठः सर्वमनिक् पूमानाक् शुक्लं हः नामय
२ महकाजायः काजपूपायः मह हयाः नकाय

हिनर्तः दम २ दमय २ नामय २ सर्व दुष्ट मत्त्वानां
मूधय गना अधिप नयः गजय २ नामय २ गा प
य २ ह २ कन २ षण २ रुग २ रुन्द २ रन्द २ ह
न २ दह २ पंच २ मथ २ मनय २ घात २ यय
पाका (धो) र्हुं हू दू ह्या हा १९ डॉन माषू जाय

कपूना रागिनि हृदयाय पञ्चात्मा विष्णु यज्ञे धनु
कमूर्ध्नि यमत्त्वानां दुःखकजकापि न्यङ्गं दैवलि
दिव्यमधुलस्यपत्तं दुपभुजमां सत्त्वानां नूतु जाया
सम्यक्त्वा चोपनिष्ठापनाय डौं आसूगने वज्रतु
व्यहः ऊँ ह्रस्वाहा १९ डौं ह्रः आकाशवायूने

जडुयकपृथिविसाचिद्यसपविवाजयः ॥ २० ॥
 गंधयुग्म चूपारिपमऊगयसामिनेचाजगः सप
 लीवाजयः ॥ २० ॥ दंवल्लिगुद्रगुषायगुपिर्वगुभुजः
 ऊं वहाः सगुफोममसर्वसत्त्वानाचि० ॥ निद्रुवजडा
 वजनगुफिद्रुवर्गगुऊं ह्रद्र ह्या हा २०

हा ॥ ३ ॥ इत्ययकवर्लिस्त्रिभु २१ ॥ ॥ ३ ॥ नमो रगवस्यगुहमा
 निके सर्वगहनद्रुगुयनातनिमर्वदवनामयद्रादिरुय
 ययसमेनागडवानादिरुयविधमिनि रगवतिगुहमागिके
 सर्वगहनद्रुदियोरि ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ दंवल्लिगुद्र २१ ममसर्व
 विद्यानुरुन २१ ॥ निद्रुवर्गगुऊं ह्रद्र ह्या हा २०

वलि॥ २२ ॥ उं नमो ४ रागवामेडु म विजयाय मय्यं ४ ४ य
कनरुकि निरुक्तु २ सव्विगथागमा इवलाकिनी साहा ॥ उं नमो नाजय
रासखाहा ॥ मममय नासय शिविनामय रविर्धमय २ ०० दीम्वलिग
इरदाधीयुक्तु वीम कनरु २ ४ ॥ निरुक्तु स्वमिखाहा ॥ उं नमो विजया
वलि॥ २३ ॥ उं नमो निरुक्तु सव्विगथागमा इवलाकिनी साहा ॥ उं नमो नाजय

[illegible]

स्वाहा ॥ १० ॥ दानयनं स्वादि × ॥ मध्वधवावलियुननार्थन
ननक्रांकनरुटस्वाहा ॥ ० ॥ वलिसमर्जितार्थदेहा ॥
यथेनास ॥ यथमोक्तानमस्यदक्षिण ॥ ॥ धनस्वययुजा ॥
इति ॥ उच्यते ॥ यथमोक्तानमस्यदक्षिण ॥ ॥ धनस्वययुजा ॥
॥ धनस्वययुजा ॥ ॥ धनस्वययुजा ॥ ॥ धनस्वययुजा ॥

मन्त्राणां कननाद्वयं । दित्वा दृढं नित्यं यत्किं मुखे वा नित्यं मवावृत्तं
त ॥ ३ ॥ तद्यथा ॥ ॥ धनं धनं २ विष्णुं धनं २ सर्वं कर्मा नवनवविष्णु
होचने स्वाहा ॥ धनं धनं धनं यास्तु वास्तु नयुजा ॥ येषु धनं धनं
ना कर्म ४ येषु धनं धनं जायते सर्वं याया विनिर्मुक्तं स्वयं वास्तु
कृति ॥ नयन ॥ ॥ मानकायक ॥ ॥ वाक्ययुजा ॥

मध्यमस्थितिके ॥ खाननन ॥ सुग ॥ इति माध्याह्नमाय ॥ ४३ ॥
रुद्रगोवकीच ॥ अथ नमनमायक ॥ वाठभक्तमानकादरुद्रविदुक्त
रुद्रिभक्तिके ॥ वृद्धकायननं सानं सर्वस्य निरुक्तिके सवाविदुक्त
ननार्थविना विधेयनमीरु ॥ १ ॥ यद्वदकायनीदवी इति सानि

^{१०}
विदुक्तिके ॥ यद्वदकायनीदवी वमायनिनमीरुक्त ॥ २ ॥ इति
मादुक्तिके दवी सनवर्ध विनायनी गीरुक्त भक्तमीदवी मादुक्त
निनमीरुक्त ॥ ३ ॥ यद्वदकायनीदवी वमायनिनमीरुक्त
समी ॥ कृष्णवर्धक वरुद्रा वनिनमीरुक्त ॥ ४ ॥

दिक्कित्तवागदिदवीद्यावर्षीकसदृशा। त्रकवर्ष्यचरिखनं
नमामुमवागदिदवी॥ १७ ॥ अथिवाकोमानोवमयत्रका
नित्तिविनि॥ त्रकवर्षीसकैकिदरुं नमामुमकोमानिनी॥
४ ॥ नमोतवीम्वीदविष्णुमवर्षीनृजसनी। सवचकधनादया
नानानीनहसु॥ १ ॥ वायव्यामवर्षीदवीसिहमात्रधसनी

यार्ककात्रमर्कित्तानिनी। स्वमदरुं नमामिदी॥ ८ ॥ अथमनेव
धीकादवाधूमवर्ष्ययज्ञाना। कदिमदधनं दवीमरा। अथिनि
मामुम॥ ९ ॥ उं नमो। एलवायुससुका। लायीनर्ण। सवीरुदवि
यिकिनाधनेकवर्ष्यविन्द्याण। उमत्रखलांगधने। करिखिदधनी
नलीरुं गडिचिमविद्वरुवनी। दादरुनधनुवनत्रकवर्ष्यवर्षी॥ १० ॥

ब्रह्मसूत्रं ध्यात्वा वा अथ विदुः निर्वसिना ॥ अथ हरे नवं संस्कृतं ॥
अथ माहिकानमाभिर्दं ॥ ० ॥ संनादत्र ॥ सद्यननयमाह नि
दय ॥ चिरपूजादकिनायुजा ॥ आहूतकाय ॥ समया सक ॥
वलिचय ॥ ॥ अथ वलिविधानसंयत्तसमाय ॥ ॥ ॥

संवत् १२०१ पोष्यदि ३ आदित्यवात सन्निधयकाहना ॥ ॥
नीमिषय का समस्तयमदानन वज्रसितमादावीदान वज्रसित
वज्रायाथी श्रीमयसि नमसिद्धिदीपि युग अमयसिद्धिमति ॥



॥ ० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नरक॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥
न नई॥